

नाथ थारे शरण पड़ी दासी भजन लिरिक्स



नाथ थारे शरण पड़ी दासी,
म्हानै भवसागर स्यूं त्यार,
काटद्यो जनम-मरण फांसी,
नाथ थारै शरण पड़ी दासी।bd।

तर्ज - नाथ मैं थारो जी थारो।

नाथ मैं भोत कष्ट पायी,
भटक-भटक चोरासी जूणी,
मिनखां देह पायी,
मिटाद्यो दुःखों की रासी,
म्हानै भवसागर स्यूं त्यार,
काटद्यो जनम-मरण फांसी,
नाथ थारै शरण पड़ी दासी।bd।

नाथ मैं पाप भोत कीन्या,
संसारी भोगों की आशा,
दुःख भोत दीन्या,
कामना छै सत्यानासी,
म्हानै भवसागर स्यूं त्यार,
काटद्यो जनम-मरण फांसी,
नाथ थारै शरण पड़ी दासी।bd।

नाथ मैं भगति नई कीन्यी,
झूठे भोगों की तृष्णा मं,
उमर खो दीन्यी,
दुःख अब मेटो अबिनासी,
म्हानै भवसागर स्यूं त्यार,
काटद्यो जनम-मरण फांसी,
नाथ थारै शरण पड़ी दासी।bd।

नाथ अब सैं आशा छूटी,
थारै श्रीचरणां री भगति ओक छै,
सरजीवन बूटी,

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना शुल्क के आपके लिए तैयार हैं। आप इसे गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरूर इनस्टॉल करें। वेबसाइट - <https://www.bhajandiyari.com>



म्हानै भवसागर स्यूं तयार,
काटद्यो जनम-मरण फांसी,
नाथ थरै शरण पड़ी दासी।bd।

नाथ थारे शरण पड़ी दासी,
म्हानै भवसागर स्यूं तयार,
काटद्यो जनम-मरण फांसी,
नाथ थरै शरण पड़ी दासी।bd।

पद रचैता – श्रीहनुमान प्रसादजी पोद्दारभाईजी।
Upload By – Vivek Agarwal Ji
